प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत उच्च प्रशिक्षित शिक्षकों द्वारा अनुभव की गई कार्य संतुष्टि के स्तर पर एक जाँच

मोहित[1] डॉ. पूनम लता मिढ़ा [2]

[1]शोधार्थी [2]शोध पर्यवेक्षक

विभाग:– शिक्षा शास्त्र

ग्लोकल यूनिवर्सिटी, मिर्जापुर पोल

सहारनपुर, उत्तरप्रदेश

ईमेल आईडी:- mohitkumar111@gmail.com

सारांश-

शिक्षा एक आजीवन प्रक्रिया है जो किसी व्यक्ति के जन्म से लेकर उसके निधन तक चलती है। एक व्यक्ति अपने सभी शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और आर्थिक गुण शिक्षा के माध्यम से प्राप्त करता है। शिक्षा व्यक्ति के अंदर जीवन जीने का हुनर पैदा करती है क्योंकि शिक्षा के बिना व्यक्ति जीवन में आने वाली चुनौतियों से नहीं निपट सकता। एक शिक्षित व्यक्ति एक सभ्य व्यक्ति होता है। शिक्षा में ज्ञान, उचित व्यवहार, तकनीकी कौशल, शिक्षण और सीखना आदि सभी शामिल हैं। परिणामस्वरूप, वह कौशल शिल्प या व्यवसायों की श्रेष्ठता के साथ-साथ इसके मानसिक, नैतिक और कलात्मक घटकों पर जोर देते हैं। एक पीढ़ी द्वारा अपने से नीचे की पीढ़ी को अपना ज्ञान प्रदान करने का प्रयास शिक्षा कहलाता है। इस सिद्धांत के अनुसार, शिक्षा एक संरचना के रूप में कार्य करती है जो सामाजिक संस्कृति की निरंतरता को बनाए रखने और व्यक्तियों को इसके साथ जोड़ने के लिए महत्वपूर्ण है। बच्चा शिक्षा के माध्यम से समाज के मूलभूत कानूनों, संस्थानों, रीति-रिवाजों और मूल्यों को सीखता है। जब उसका ध्यान उस समाज के अतीत पर होगा तभी वह उससे जुड़ पाएगा। शिक्षा व्यक्ति के व्यक्तित्व और प्राकृतिक क्षमता को बढ़ावा देने की प्रक्रिया है।

विषय संकेत:- आर्थिक गुण शिक्षा, कौशल शिल्प व्यवसायों की श्रेष्ठता।

परिचय

प्राथमिक विद्यालय के प्रशिक्षकों की युवा छात्रों के लिए शैक्षिक नींव रखने में महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इन शिक्षकों के पास बच्चों को उनके प्रारंभिक वर्षों में पालन-पोषण और शिक्षित करने के लिए आवश्यक ज्ञान, कौशल और उत्साह है। व्यापक शैक्षिक प्रणाली को संरक्षित करने और बढ़ाने के लिए उनके काम की खुशी को समझना आवश्यक है क्योंकि भविष्य की पीढ़ी कैसे सोचती है इस पर उनका महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। नौकरी से संतुष्टि एक जटिल और बहुआयामी विचार है जो किसी के रोजगार से संतुष्टि

और खुशी की संपूर्ण भावना को संदर्भित करता है। उच्च कुशल शिक्षकों के लिए नौकरी की संतुष्टि में व्यावसायिक विकास के अवसरों और कार्य वातावरण से लेकर कक्षा की गतिशीलता और छात्र संबंधों तक कई प्रकार के तत्व शामिल हैं।

इस शोध का उद्देश्य उच्च कुशल प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों के बीच कार्य संतुष्टि के स्तर के साथ-साथ उन तत्वों की जांच करना है जो या तो उस संतुष्टि को बढ़ाते हैं या कम करते हैं। इन तत्वों को पहचानकर, शिक्षक की भलाई और निर्देश को बढ़ाने के प्रभावी तरीके अपनाए जा सकते हैं, जिसके परिणामस्वरूप अंततः युवा विद्यार्थियों के लिए अधिक अनुकूल शिक्षण वातावरण तैयार होगा। शैक्षिक उद्योग में कार्य संतुष्टि के महत्व को पूर्व अध्ययन द्वारा रेखांकित किया गया है। जो शिक्षक अपनी नौकरी से खुश हैं, उनके प्रेरित, रचनात्मक और अपने काम के प्रति समर्पित होने की अधिक संभावना है, जिससे छात्रों के परिणाम और समग्र स्कूल प्रदर्शन में सुधार होता है। इसके विपरीत, असंतुष्ट प्रशिक्षकों को थकान, उत्पादकता में कमी और अधिक टर्नओवर दर का सामना करना पड़ सकता है, जो सभी छात्रों के शैक्षिक अनुभवों के लिए हानिकारक होगा।

न्यायदर्श-

पैनल में लखनऊ के 300 प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक शामिल हैं। इन लक्ष्यों के प्रकाश में, यह निर्धारित किया गया था कि:

1. हिंदी-माध्यम विद्यालयों में प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों ने माध्यमिक विद्यालय के प्रशिक्षकों की तुलना में संतुष्टि के उच्च स्तर की सूचना दी।
2. प्राथमिक विद्यालय के प्रशिक्षकों के साथ-साथ माध्यमिक और माध्यमिक विद्यालय के शिक्षक अंग्रेजी माध्यम वाले विद्यालयों में अधिक खुश थे।
3. महिला प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालय शिक्षक भी पुरुष समकक्षों की तुलना में अपनी नौकरी में अधिक खुश हैं।
4. सबसे लंबे कार्यकाल वाले माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों ने संतुष्टि के उच्च स्तर की सूचना दी।

त्रिवेणी सिंह (1988) ने माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की कार्य संतुष्टि और उनकी सामाजिक-आर्थिक स्थिति के संबंध में शिक्षण प्रभावशीलता पर शोध किया। इस शोध में माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की सामाजिक आर्थिक स्थिति और कार्य प्रसन्नता की जांच की गई, और मैंने शिक्षण प्रभावशीलता को मापने के लिए एक पैमाना भी बनाया।

प्रयोग में फैजाबाद जिले के 300 माध्यमिक विद्यालय प्रशिक्षक (200 पुरुष और 100 महिलाएं) और 1500 कक्षा 10 के छात्र (1000 लड़के और 500 लड़कियां) शामिल थे। डेटा को कुमार और मुथा द्वारा

विकसित कार्य संतुष्टि माप, कुलश्रेष्ठ द्वारा विकसित सामाजिक और आर्थिक स्थिति पैमाने और शिक्षण प्रभावशीलता को मापने के लिए एक स्व-निर्मित पैमाने का उपयोग करके संकलित किया गया था। प्रत्येक प्रशिक्षक को अपने पाँच विद्यार्थियों में से कुछ से नृत्य प्राप्त हुआ।

इस अध्ययन के उद्देश्य निम्न थे-

1. माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की कार्य संतुष्टि और शिक्षण दक्षता के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करना

2. माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति और उनकी शिक्षण दक्षता के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन

3. माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की सामाजिक स्थिति और उनकी कार्य संतुष्टि के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन

4. ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में कार्यरत माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों का शिक्षण दक्षता का तुलनात्मक अध्ययन करना ।

न्यायदर्श-

अध्ययन के लिए मेरठ विश्वविद्यालय के 11 संस्थानों के 600 प्रशिक्षकों को यादृच्छिक रूप से चुना गया था, और घटना के बाद शोध किया गया था। उपकरण के रूप में, गिलानी के नए मूल्य परीक्षण, कुमार के शिक्षक व्यावसायिक परीक्षण प्रभावली, और टीएचए के शिक्षण प्रभावशीलता पैमाने के अनुकूलन को नियोजित किया गया था। इस विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकला कि

1. यह पाया गया कि प्रशिक्षकों के मूल्यों और उनके काम की खुशी का कॉलेज स्तर पर शिक्षण प्रभावकारिता के साथ महत्वपूर्ण संबंध है।

2. एक समान संभाव्यता वक्र शिक्षण की दक्षता को नियंत्रित करता प्रतीत होता है।

3 प्रभावी और अप्रभावी दोनों शिक्षक, प्रकृति द्वारा प्रदत्त मूल्य, जिन्होंने शिक्षक के रूप में प्रशिक्षकों के प्रदर्शन को प्रभावित किया, शिक्षकों की कार्य संतुष्टि में पर्याप्त अंतर देखा गया।

प्रस्तावना-

शैक्षिक प्रक्रिया में शिक्षक एक धुरी के रूप में कार्य करता है। चूंकि मौजूदा दौर में प्रशिक्षक और छात्र दोनों ही शैक्षिक प्रक्रिया में सक्रिय भागीदार हैं, इसलिए शिक्षक की अत्यंत आधुनिक सीआर एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। छात्र अपने शिक्षकों की सहायता के बिना नहीं सीख सकते। अपने विद्यार्थियों को शिक्षित और मार्गदर्शन करके, देश के भविष्य के विकास में योगदान देना शिक्षक का प्राथमिक कार्य है। जॉन एडम, एक अंग्रेजी शिक्षाविद्, ने शिक्षा को दो भागों में विभाजित किया: छात्र, जिसे प्रभावित

किया जा सकता है, और प्रशिक्षक, जिसे प्रभावित किया जा सकता है। शिक्षा के तीन घटक - शिक्षक, छात्र और पाठ्यक्रम - अंग्रेजी विद्वान रायबर्न द्वारा स्वीकार किए जाते हैं। पिछले पचास वर्षों में शिक्षा के क्षेत्र में बहुत उन्नति हुई है। इस अवधि में शिक्षा प्रौद्योगिकी काफी उन्नत हुई है। शैक्षिक प्रौद्योगिकी के पेशेवरों के अनुसार, शिक्षा के तीन घटक हैं। छात्र, प्रशिक्षक और शिक्षण-सीखने की सेटिंग, जिसमें पाठ्यक्रम, निर्देशात्मक रणनीतियाँ और शिक्षण उपकरण, साथ ही भौतिक वातावरण, सामाजिक वातावरण और मूल्यांकन प्रक्रियाएँ शामिल हैं। इन तीनों को अब अधिकांश शिक्षाविदों द्वारा शिक्षा का एक घटक माना जाता है। जब शिक्षक के प्रमाणन की बात आती है, तो इसे उपरोक्त चरणों में विभाजित किया जाता है, और विभिन्न स्तरों पर विभिन्न योग्यता प्रमाणपत्र भी आवश्यक होते हैं। इन्हें तीन समूहों में बाँटकर हम सामान्यतः यह निर्धारित करने का प्रयास करेंगे कि इन तीनों स्तरों पर एक शिक्षक की योग्यता क्या होनी चाहिए।

इसे निम्न तालिका द्वारा स्पष्ट कर सकतें हैं-

प्राथमिक	**माध्यमिक**	**उच्च शिक्षा**
बी.एड. या डी. एड. होना चाहिए।	बी.एड. डिग्री होनी चाहिए।	एम.ए. 55% मार्क के साथ होना चाहिए।
इसके अलावा कई राज्य |T.E.T. (Teacher Eligblity test) लेतें हैं।	टी.जी.टी. या पी.जी.टी. का प्रावधान है।	राष्ट्रीय स्तर पर एक नेशनल | टेस्ट (NET) का आयोजन किया जाता है जिसे उच्च शिक्षा में जाने। के लिए उत्तीर्ण करना अनिवार्य है।
तथा राष्ट्रीय स्तर पर C.TE.T. (Central leval | teacher elijblity test) की परीक्षा होती है।		इसके अतिरिक्त पी.एच.डी. भी उच्च शिक्षा में जाने का रास्ता तैयार करता है - एम.फिल

इस चार्ट के माध्यम से, हम यह अनुमान लगा सकते हैं कि उच्च शिक्षा शिक्षण करियर का अंतिम चरण है और इसमें छात्रों का काफी समय खर्च होता है। परिणामस्वरूप, विभिन्न स्तरों पर योग्यता के अलग-अलग प्रमाणपत्रों की आवश्यकता होती है। वर्तमान में, उन्नत ज्ञान और विज्ञान के समय में, जब वैश्वीकरण

के परिणामस्वरूप पूरा विश्व एक गाँव बन गया है। ऐसे में अनुदेशकों की जिम्मेदारियां और भी बढ़ गई हैं।

शिक्षकों की समस्याएं- समकालीन काल वैश्वीकरण का युग है, और जैसे-जैसे समाज अधिक जटिल होता जाता है, यह अपरिहार्य है कि एक का दूसरे पर प्रभाव पड़ेगा। परिणामस्वरूप, प्रोफेसरों के सामने विभिन्न प्रकार के मुद्दों को इस तरीके से व्यक्त किया जा सकता है।

1. सामाजिक समस्या
2. मनोवैज्ञानिक समस्या
3. वातावरण से सामंजस्य सम्बन्धी समस्या
4. पारिवारिक समस्या
5. राजनितिक समस्या

सामाजिक समस्या-

मनुष्य समाज का एक हिस्सा है और उस समाज में अपने भरण-पोषण के लिए उसका एकमात्र विकल्प कड़ी मेहनत है। वह आजीविका कमाने के लिए समाज में विभिन्न व्यावसायिक रुझानों का पालन करने का प्रयास करता है, और वह तब तक प्रयास करता रहता है जब तक कि वह आजीविका कमाने के उस तरीके से खुश न हो जाए। चूँकि एक शिक्षक को एक परिवार का समर्थन भी करना चाहिए, जैसा कि समाज एक शिक्षक से अपेक्षा करता है, वे दोनों एक ही समाज के सदस्य हैं, जो ऐसा करते हुए, अपने शिक्षण श्रम के माध्यम से समाज के प्रत्येक सदस्य को शिक्षित करते हैं। वह समाज के प्रत्येक सदस्य को निष्पक्ष रूप से शिक्षित करता है और बदले में शिक्षक चाहता है कि समाज निष्पक्ष रूप से प्रत्येक व्यक्ति के कल्याण पर विचार करे। शिक्षकों के खिलाफ उनकी भाषा, लिंग, जाति या धर्म के आधार पर भेदभाव एक सामाजिक मुद्दा है जो उनकी शिक्षा देने की क्षमता में हस्तक्षेप करता है। हमें लगता है कि यह मुद्दा छोटा है, फिर भी कभी-कभी यह बड़े रूप में सामने आता है।

मनोवैज्ञानिक समस्या- ऐसे अवसर आते हैं जब शिक्षकों को मनोवैज्ञानिक समस्याएं भी होती हैं, जो गंभीर सामाजिक समस्याएं भी हो सकती हैं। मनोवैज्ञानिक मुद्दों के कारण प्रशिक्षक के आचरण में परिवर्तन, जैसे शिक्षक का पाठ योजना में रुचि न दिखाना, लगातार कक्षा को सोचने के लिए छोड़ देना, शिक्षण प्रक्रिया में पूरी तरह से शामिल होने में असमर्थ होना आदि।

वातावरण से सामंजस्य सम्बन्धी समस्या- यदि किसी शिक्षक को उसकी मानसिक स्थिति के आधार पर नियुक्त नहीं किया जाता है, तो वह उस स्कूल के माहौल के साथ सामंजस्य स्थापित नहीं कर पाएगा। जब शिक्षक स्कूल के माहौल में पहुंचता है तो वह माहौल उसके लिए एक जैसा नहीं होता क्योंकि माहौल

में अंतर होना सामान्य बात है। है। पर्यावरण से संबंधित मुद्दों की श्रेणी के अंतर्गत, शिक्षकों को एक-दूसरे के साथ सहयोग करने में संघर्ष करना, स्कूल को केवल समय बर्बाद करने का एक तरीका मानना, शिक्षक के रूप में अपने कर्तव्यों के प्रति कम उत्साह प्रदर्शित करना, छात्रों के सामने चिड़चिड़ा व्यवहार करना, कक्षा में देर से आना और ऐसा करना शामिल है।

पारिवारिक समस्या- चूँकि एक शिक्षक परिवार का सदस्य और कभी-कभी अपने परिवार का नेता दोनों होता है, इसलिए उस पर बहुत अधिक जिम्मेदारी होती है। यदि शिक्षक अपनी नौकरी से खुश है तो उसके परिवार की खुशी भी निश्चित है। देखा जाता है। परिवार की वित्तीय चुनौतियाँ, परिवार के सदस्यों के बीच लड़ाई का कक्षा पर प्रभाव आदि। इन सबके कारण, प्रशिक्षक स्कूल में पढ़ाने के लिए अपना पूरा समय समर्पित करने में असमर्थ है, इसलिए वह केवल स्पष्टीकरण प्रदान करने का प्रयास करता है।

राजनितिक समस्या- शिक्षक न केवल उस समाज के सामाजिक परिवेश में रहता है, बल्कि वह राजनीतिक परिवेश में भी रहता है, जहाँ उसे कुछ राजनीतिक अधिकार प्राप्त होते हैं। यह देखते हुए कि कई शिक्षाविदों ने विद्यार्थियों को राजनीति से बचने की सलाह दी है, स्कूलों में राजनीति की उपस्थिति आधुनिकता का एक उपहार है। कक्षा में शिक्षक के साथ चल रहे राजनीतिक मुद्दे के तहत, एक निश्चित विचारधारा से जुड़े होने के कारण प्रशिक्षक के साथ अनुचित व्यवहार, राजनीति से प्रेरित होना, एक निश्चित शिक्षक को निशाना बनाना, स्कूल को गुटों में विभाजित करना आदि शामिल हैं।

3. समस्या कथन (statement of the problem)- प्राथमिक स्तर पर कार्यरत अति उच्च शिक्षित शिक्षक एवं उनकी कार्य संतुष्टि का अध्ययन

4. पारिभाषिक शब्दावली (terms define):-

शिक्षकों की रूचि- व्यक्ति अक्सर अपनी रुचि के आधार पर उच्च शिक्षा का क्षेत्र चुनता है। यह उसके रोजगार के क्षेत्र में उसकी वांछित योग्यता से जुड़ा है। पिछली तालिका में शिक्षण पेशे में कई स्तरों का वर्णन किया गया है, जिसमें कई स्तर भी हैं। सामाजिक और वित्तीय स्थिरता के कारणों से, आगे की शिक्षा के लिए योग्यता और क्षमता वाला एक शिक्षक कभी-कभी प्राथमिक और माध्यमिक स्तर पर काम करने का विकल्प चुनेगा। ऐसा करने से व्यक्ति के अर्जित कौशल का शोषण नहीं हो पाता है, जिससे स्वाभाविक रूप से चिड़चिड़ापन, व्याकुलता आदि और काम के प्रति रुचि की कमी हो जाती है, जिसका प्रभाव शिक्षा क्षेत्र पर पड़ता है। नौकरी के लिए स्कूली शिक्षा में रुचि महत्वपूर्ण है। छात्र एक शिक्षक की सबसे बड़ी संपत्ति होते हैं क्योंकि वे उसे हमेशा याद रखेंगे। यदि एक शिक्षक उत्साह और प्रतिबद्धता के साथ पढ़ाता है, तो छात्र उसकी कक्षा में भी सीखने का आनंद लेंगे।

कार्यसंतुष्टि-

नौकरी में ख़ुशी का विचार अस्पष्ट है। यह कार्यस्थल संस्कृति के लिए मौलिक है। काम के दौरान, संगठन होता है, लोग कार्यस्थल के आसपास कैसे व्यवहार करते हैं, इस पर नियंत्रण, कार्यस्थल के साथ अनुबंध करना, उनके कौशल के आधार पर प्रशिक्षकों को काम पर रखना आदि। ये सभी वास्तविक कार्य पूर्ति के विचार के भाग हैं। सबसे पहले, मानसिक, शारीरिक और पर्यावरणीय तत्वों का मिश्रण कार्य संतुष्टि में योगदान देता है। जो व्यक्ति स्वयं को इन सब से संतुष्ट पाता है वह आत्मविश्वास से कह सकता है कि वह अपनी नौकरी से संतुष्ट है। वे स्वाभाविक रूप से अधिक प्रभावी हो जाते हैं। चूंकि उसकी कार्यकुशलता बढ़ेगी, एक शिक्षक की कार्यकुशलता तब होगी जब वह तीन पर्यावरणीय, मानसिक और शारीरिक घटकों से संतुष्ट रहेगा। किसी कर्मचारी का अपने रोजगार के प्रति जो समग्र दृष्टिकोण होता है उसे कार्य संतुष्टि कहा जाता है। एक कर्मचारी अपने परिवेश से क्या अपेक्षा करता है और वह वास्तव में क्या अनुभव करता है, के बीच विसंगति के आधार पर इसकी गणना की जा सकती है। ऐसा कहा जाता है कि एक सकारात्मक भावनात्मक स्थिति नौकरी से संतुष्टि के साथ आती है। यह कार्यस्थल द्वारा कर्मचारी की मांगों को समायोजित करने का परिणाम है।

नौकरी से संतुष्टि का वर्णन करने के लिए एक सुखद भावनात्मक स्थिति का भी उपयोग किया जा सकता है। नौकरी की संतुष्टि को कभी-कभी उस डिग्री के रूप में परिभाषित किया जाता है जिस हद तक कोई व्यक्ति अपने कार्य वातावरण से संतुष्ट होता है, और कभी-कभी यह उस डिग्री को संदर्भित करता है जिस हद तक कोई व्यक्ति अपने कार्यस्थल के किसी विशेष पहलू से संतुष्ट होता है। वह उससे कितना प्रसन्न है, या वह उसके बारे में कैसा महसूस करता है?

किशोरावस्था जीवन का एक ऐसा समय है जब ऊर्जा का स्तर अपने चरम पर होता है और युवा अपने भविष्य के करियर के बारे में खुशी से सपने देखते हैं। इसके लिए उन्हें दिशा-निर्देश की जरूरत होती है, जो स्कूल मुहैया कराते हैं। एक ऐसा भविष्य बनाना जिसमें उन्हें अपने लक्ष्यों को ध्यान में रखते हुए संगठन से सहायता मिले। संस्था की स्थापना समाज में भौतिकवाद और आधुनिकता के प्रभाव को कम करने और ज्ञान को बढ़ावा देने के लक्ष्य के साथ मूल्यों के विकास, राष्ट्रीयता की भावना, एकता का पाठ और विभिन्न ज्ञान विज्ञानों के ज्ञान को सुनिश्चित करने के लिए की गई थी। और पश्चिमी सभ्यता के प्रतिस्थापन के रूप में दर्शनशास्त्र। प्रमेयस्थ बनने के लिए संभव उच्चतम बिंदु तक पहुंचें। विभिन्न सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि के छात्र, अन्य धर्मों को मानने वाले लोग, औसत, मध्यमवर्गीय परिवारों के बच्चे, और कमोबेश प्रशिक्षक और स्टाफ सदस्य सभी हमारी प्रथम श्रेणी की कक्षा बनाते हैं। परिणामस्वरूप, विविधता में एकता का एक बड़ा उदाहरण देखने को मिल सकता है। यदि शिक्षक भारतीय मानक मूल्यों के आदर्श के अनुसार जीवन यापन करेगा तो भविष्य का भारत अत्यंत स्वस्थ

होगा। ऐसे में उन्हें शिक्षा देने वाले प्रशिक्षकों का समायोजन अपने आप में एक अहम भूमिका निभाता है। शिक्षकों की सामाजिक, आर्थिक और समायोजन स्थिति के साथ-साथ उनकी नौकरी की संतुष्टि उनके समग्र कल्याण से जुड़ी हुई है। जिसका अवलोकन कक्षा में पढ़ाते समय उनके आचरण के तरीके से स्पष्ट होता है। एक निराश प्रशिक्षक को अपनी कक्षा को उचित रूप से संशोधित करना मुश्किल लगता है। परिणामस्वरूप उसकी कक्षा के बच्चे निराशावाद से नकारात्मक प्रभाव पड़ने से बच नहीं पाते हैं।

इस वजह से समाज और सरकार को इस बात की जानकारी होनी चाहिए कि शिक्षक अपने जीवन और अपनी नौकरी से कितने संतुष्ट हैं। यदि इसका समाधान नहीं किया गया तो सामाजिक सिद्धांतों से मुक्त होकर धर्म की आड़ में आतंकवाद उभरेगा। मूल्य नष्ट हो रहे हैं, समाज और परिवार टूट रहे हैं और मानवीय लालच आसमान छू रहा है। कुछ मायनों में इन सबके लिए हमारी संरचना ही दोषी है। शोधकर्ता ने इन सभी विचारों को ध्यान में रखते हुए "प्राथमिक स्तर पर कार्यरत अत्यधिक शिक्षित शिक्षकों और उनकी कार्य संतुष्टि का अध्ययन" किया है।

शोध का परिसीमन (delimitation of the study):-

1. प्रस्तुत शोध महाराष्ट्र राज्य के वर्धा जनपद तक सिमित है ।
2. यह शोध कक्षा 8 तक अध्यापन करने वाले अध्यापकों तक सिमित है।

शोध का ओचित्य (rational of the study):-

एक शिक्षक समाज में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। हुमायूं कबीर की राय में एक शिक्षक किसी देश की नींव होता है। अपने शिक्षण के दौरान एक शिक्षक समाज का पुनर्निर्माण कर सकता है। यह सच है कि अपने जीवनकाल के दौरान, एक शिक्षक असंख्य छात्रों को बौद्धिक परंपराएँ और तकनीकी क्षमताएँ सिखाता है। जो एक देश को एक नया रूप देते हैं. केवल वे प्रशिक्षक ही इस गतिविधि को पूरा कर सकते हैं जो अपने काम से खुश हैं। जब कोई शिक्षक अपनी नौकरी से खुश होता है, तो यह उसकी उच्च स्तर की उत्पादकता, शिक्षा की गुणवत्ता और सामाजिक-आर्थिक स्थिति सहित अन्य चीजों में दिखाई देता है। एक शिक्षक एक अत्यंत महत्वपूर्ण व्यक्ति होता है। क्योंकि यह भविष्य के वैज्ञानिकों, इंजीनियरों, नेताओं, शिक्षकों और अन्य व्यवसायों को प्रशिक्षित करता है। एक कुशल और कुशल नागरिक द्वारा ही देश के विकास में काफी मदद मिल सकती है। ऐसे व्यक्ति न केवल स्वयं के लिए तैयार होते हैं, बल्कि वे देश के सभी निवासियों के लिए भी एक उदाहरण स्थापित करते हैं, दूसरों को लक्ष्य निर्धारित करने और अपने संबंधित क्षेत्रों में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करते हैं। हालाँकि, वर्तमान शिक्षक की नौकरी बहुत ही दयनीय और निराशाजनक स्थिति में आ गई है। क्या यह स्थिति प्रशिक्षकों की उनकी योग्यता के कारण रोजगार पाने में असमर्थता के कारण है? शिक्षा के सिद्धांत और लक्ष्य समग्र रूप से एक शिक्षक

की गुणवत्ता पर निर्भर करते हैं, और यह गुणवत्ता केवल तभी देखी जा सकती है जब एक शिक्षक को ऐसे कर्तव्य सौंपे जाते हैं जो उसके कौशल स्तर के लिए उपयुक्त होते हैं क्योंकि वे भविष्य के उत्पादक नागरिकों को प्रशिक्षित करते हैं। इस वजह से, यह समझना महत्वपूर्ण है कि लोग अपने काम से कितने संतुष्ट हैं यदि यह उनकी योग्यता के अनुरूप नहीं है। इस प्रकार कर्मचारियों की कार्य संतुष्टि पर शोध करना महत्वपूर्ण है। परिणामस्वरूप, कई मूल्यांकन पढ़ने के बाद, मैं इस विषय के बारे में और अधिक जानने के लिए प्रेरित हुआ।

शोध के उद्देश्य-

1. प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत अतिउच्च शिक्षित शिक्षकों की पहचान करना ।

2. प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत अतिउच्च शिक्षित शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का अध्ययन करना ।

3.प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत अतिउच्च शिक्षित शिक्षकों विद्यालयी वातावरण के साथ समायोजन का अध्ययन करना ।

4. प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत अतिउच्च शिक्षित शिक्षकों की सामाजिक, आर्थिक पृष्ठभूमि का अध्ययन करना ।

न्यादर्श-

प्रस्तुत लघु शोध हेतु वर्धा जिले में निजी एवं सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में अध्यापन करने वाले अतिउच्च शिक्षित शिक्षकों को प्रतिदर्श के रूप में चुना गया है जो इस प्रकार हैं-

क्रमांक	**विद्यालय**	**संख्या**
1.	निजी	25
2.	सरकारी	25
कुल	निजी+सरकारी	50

उपकरण-

प्रस्तुत अध्ययन में आंकड़ों के संग्रहण के लिए शोधकर्ता द्वारा इस उद्देश्य हेतु कार्य संतुष्टि से सम्बंधित "नेशनल साइकोलोजिकल कारपोरेशन डा. मीरा दीक्षित द्वारा निर्मित प्रमाधिकृत मापनी का प्रयोग किया गया।

प्रदशों का विश्लेषण एवं निर्वचन- प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत सभी उच्च शिक्षित शिक्षकों की संख्या 50 की श्रेणी में लिया गया है। इन 50 की संख्या में प्रश्नों के माध्यम से आठ स्तर क्रमश: A.B.C.D.EF, G H आदि में बांटा गया है। इन आठों का माध्य निकालने के बाद उसका विचलन निकाला गया है। विचलन

निकालने के बाद z फलांक निकाला गया है। z फलांक निकालने के बाद नौकरी से संतुष्टि का पैमाना कृत डॉ. मीरा दीक्षित के मैनुअल में टेबल न. 8 से z फलांक का रेंज तथा उसका स्तर ज्ञात किया गया है।

z फलाक रेंज +2.01 से और उससे ऊपर 17 अतिउच्च शिक्षित शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का स्तर अत्यधिक उच्च संतुष्टि रहा।

z फलांक रेंज +1.26. से +2.00 तक के बीच में 3 शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का स्तर 'उच्च संतुष्ट' रहा। z फलांक रेंज +0.51 से +1.25 के बीच अध्यापक के कार्य संतुष्टि का स्तर 'औसत से अधिक' रहा। z फलांक रेंज -0.50 से +0.50 तक 3 शिक्षकों का कार्य संतुष्टि का स्तर औसत संतुष्ट रहा। z फलाक रेंज -0.51 से 1.25 के बीच में 2 शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का स्तर औसत से कम संतुष्ट रहा।

z फलांक रेंज -1.26. से -2.00 के बीच में 2 शिक्षकों का कार्य संतुष्टि का स्तर 'असंतुष्ट' था।

z फलांक रेंज -2.01 और उससे अधिक 22 अतिउच्च शिक्षित शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का स्तर 'अत्यधिक उच्च असंतुष्ट रहा।

हम उपरोक्त ग्राफ में स्पष्ट रूप से देख सकतें हैं कि अतिच्च शिक्षित शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का स्तर सबसे अधिक 'अत्यधिक उच्च असंतुष्ट दिखाई देता है अर्थात प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत अतिउच्च शिक्षित शिक्षक 50 में से 22 शिक्षकों का कार्य संतुष्टि का स्तर 'अत्यधिक उच्च असंतुष्ट था' ।

तालिका 4.1: प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत अतिउच्च शिक्षित शिक्षको की कार्य संतुष्टि, स्तर व उनका प्रतिशत-

क्रमांक	**रेंज आफ z फलांक**	**ग्रेड**	**शिक्षको की संख्यां**	**प्रतिशत**	**कार्य संतुष्टि का स्तर**
1.	+2.01 और उससे ऊपर	A	17	34%	अत्यधिक उच्च संतुष्टी
2.	+1.26 से +2.00 तक	B	3	6%	उच्च संतुष्ट
3.	+0.51 से +1.25 तक	C	1	2%	औसत से अधिक
4.	-0.50 से +0.50 तक	D	3	6%	औसत संतुष्ट

5.	-0.51 से -1.25 तक	E	2	4%	औसत से कम संतुष्ट
6.	-1.26 से -2.00 तक	F	2	4%	असंतुष्ट
7.	-2.01 और उससे ऊपर	G	22	44%	अत्यधिक उच्च असंतुष्ट
कुल शिक्षको की संख्यां तथा प्रतिशत			50	100%	

परिणाम एवं निष्कर्ष –

प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत 50 उच्च प्रशिक्षित शिक्षकों में से 22 अपनी नौकरी से बहुत संतुष्ट हैं। इन 50 प्रशिक्षकों में से 17 ने स्वयं को अत्यंत प्रसन्न बताने का प्रयास किया है। तीन असाधारण रूप से बुद्धिमान प्रशिक्षकों में उच्च स्तर की कार्य संतुष्टि थी। इन 50 प्रशिक्षकों में से एक के पास कार्य संतुष्टि का औसत स्तर से अधिक था। तीन उच्च योग्य प्रशिक्षकों की कार्य संतुष्टि का स्तर सामान्य था। प्राथमिक विद्यालयों में काम करने वाले दो उच्च शिक्षित शिक्षकों ने राष्ट्रीय औसत की तुलना में कार्य संतुष्टि के निम्न स्तर की सूचना दी, जबकि दो उच्च शिक्षित शिक्षकों ने कार्य संतुष्टि के निम्न स्तर की सूचना दी।

प्राथमिक विद्यालयों में काम करने वाले बहुत उच्च शिक्षित शिक्षक आर्थिक संतुष्टि के विभिन्न स्तरों की रिपोर्ट करते हैं: 50 में से 21 शिक्षक मानक से अधिक वित्तीय रूप से संतुष्ट प्रतीत होते हैं, जबकि 29 शिक्षक कम संतुष्ट प्रतीत होते हैं।

संदर्भ सूची

1. मंगल, एस. के (2015) शिक्षा मनोविग्यान
2. शर्मा, आर. एस. (2008) शिक्षा के तकनीकी आधार
3. वर्मा, जे. पी. (2013) शैक्षिक प्रबंधन
4. गुप्ता, एस.पी (2017) शोध संदर्शिका सम्प्रत्यय, कार्यविधि एवम प्रविधि
5. सिंह, अरुण (2017) मनोविज्ञान समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ
6. http://www.itkhoj.com tecch.....
7. http://him.wikipedia.org wiki>.....

8. http://www.jagranjuction.com>..

9. Elearning.vov.ac.in>content (शैक्षिक तकनीकी educational technology MAED 104